समास

अनश्च

Name:- Soni kumari
class :- B.A III year
Deptt :- Sanskrit

प्रस्तुत सूत्र वरदराजविरचित लघुसिद्धान्त कौमुदी के समास प्रकरण का अव्ययीभावसमास के अन्तर्गत विधि सूत्र है। यहाँ मात्र 'अनश्च' कहने मात्र से सूत्र का अर्थ स्पष्ट नहीं होता अतः इसकी स्पष्टीकरण के लिए 'राजाहः सखिभ्यष्टच्' से 'टच्' तथा 'अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः' से 'अव्ययीभावे' की अनुवृत्ति करते हैं। 'अव्ययीभावे' पञ्चम्यन्त में विपरिणत हो जाता है जिससे सूत्रस्थ 'अनः' उसका विशेषण बन जाता है। फलतः इस 'अनः' में तदन्त विधि हो जाती है। 'समासान्ताः' का भी अधिकार प्राप्त है। इस प्रकार सूत्र का अर्थ है — अन्नन्त (जिसके अन्त में 'अन्' हो) अव्ययीभाव से समासान्त टच् (अ) प्रत्यय होता है।

उदा० — राज्ञः समीपम् (राजा के समीप) इस विग्रह में समास एवं प्रातिपदिकादि कार्य होने पर 'उपराजन्' इस स्थिति में प्रकृत सूत्र से 'टच्' होने पर 'उपराजन् अ' रूप बनने पर बनता है।

नस्तद्धिते

प्रस्तुत सूत्र अव्ययीभाव समास के अन्तर्गत एक विधिसूत्र है। सूत्र की स्पष्टीकरण के लिए 'अस्य' और -टेः तथा अल्लोपोऽनः से लोपः की अनुवृत्ति करते है। सूत्रस्थ 'नः' अस्य का विशेषण है। अतः उसमें तदन्त विधि हो जाती है। 'अङ्गस्य' का अधिकार प्राप्त है। अतः सूत्र का अर्थ होगा है — तद्धित प्रत्यय परे रहने पर नकारान्त 'अ' संज्ञक अङ्ग के 'टि' का लोप हो जाता है। जैसे: — 'उपराजन् अ' इस स्थिति में 'उपराजन्' अ संज्ञक अङ्ग है और उसके अन्त में नकार भी है। अतः तद्धित प्रत्यय (टच्) परे रहने के कारण प्रकृत सूत्र से टि (अन्) का लोप होकर 'उपराज् अ' = 'उपराज' शब्द बनता है।

इससे ङि विभक्ति में 'उपराजे' पद बनता है। इसी प्रकार 'आत्मनि अधि (आत्मा के विषय में) इस विग्रह में 'अध्यात्मम्' रूप होता है।

Name :- Sori Kumari
class :- B.A. II year
Deptt :- Sanskrit

रूपसिद्धि

उपराजम्

लौ० वि० – राज्ञः समीपम्

अलौ० वि० – राजन् ङस् उप

ऐसा विग्रह होने पर अव्ययं विभक्ति–० से सामीप्य अर्थ में विद्यमान 'उप' अव्यय का राजन् शब्द के साथ समास होने पर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिक संज्ञा होने पर 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' से 'सुप' (ङस्) का लोप होने पर 'राजन् उप रूप बना' इस स्थिति में 'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' से 'उप' की उपसर्जन संज्ञा होने पर 'उपसर्जनं पूर्वम्' से उसके पूर्व प्रयोग के बाद 'उपराजन्' रूप बना। इस स्थिति में 'अनश्च' से टच् (अ) होने पर 'नस्तद्धिते' सूत्र से राजन् की टि (अन्) का लोप होने के बाद 'उपराज अ = 'उपराज' शब्द की पुनः प्रातिपदिक संज्ञा 'एकदेशविकृतमनन्यवत्' इस न्याय से होने के कारण 'स्वौजसमौट' से 'सु' विभक्ति आने पर 'अव्ययीभावश्च' से अव्यय संज्ञा के कारण 'अव्ययादाप्सुपः' से 'सु' का लोप प्राप्त था, किन्तु 'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' से 'सु' का 'अम्' आदेश होने पर 'अमि पूर्वः' से पूर्व रूप होने पर रूप

उपराजम् पद सिद्ध होता है।

Name:- Soni Kumari
Class:- B.A III year
Deptt:- Sanskrit

नपुंसकादन्यतरस्याम्

प्रस्तुत सूत्र अव्य समास प्रकरण के अव्ययीभाव समास के अन्तर्गत एक विधि सूत्र है। इस सूत्र के अर्थ की स्पष्टीकरण के लिए 'राजाहः सखिभ्यष्टच्' से 'टच्' और अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः से 'अव्ययीभावे' एवम् 'अनश्च' से अनः की अनुवृत्ति होती है। तथा 'समासान्ताः' का भी अधिकार प्राप्त होता है। 'अनः' पद 'नपुंसकाद्' का विशेषण है। अतः इसमें तदन्त विधि हो जाती है। इस प्रकार सूत्र का अर्थ है— अव्ययीभाव समास में अन्नन्त (जिसके अन्त में 'अन्' हो) नपुंसक लिङ्ग शब्द से समासान्त 'टच्' विकल्प से होता है।

उदा० — 'चर्मणः समीपम् (चमड़े के समीप) इस विग्रह में बने 'उपचर्मन्' शब्द में प्रकृत सूत्र से टच् होने पर टिलोप के बाद 'उपचर्मम्' रूप बनता है। टच् के अभाव में 'उपचर्म' रूप होता है।

अर्थः

यह अव्ययीभाव समास के अन्तर्गत विधि सूत्र है। सूत्र की स्पष्टीकरण के लिए 'राजाहः सखिभ्यष्टच्' से टच् और अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः से अव्ययीभावे तथा नपुंसकादन्यतरस्याम् से 'अन्यतरस्याम्' की अनुवृत्ति की जाती है। 'समासान्ताः' का भी अधिकार प्राप्त है। अव्ययीभावे' पञ्चम्यन्त के में विपरिणत हो जाता है। तथा सूत्रस्थ 'अयः' उसका विशेषण बनता है। विशेषण होने से उसमें तदन्त विधि हो जाती है। अय प्रत्याहार है जिसके अन्तर्गत सभी (पाँच) वर्णों के प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ वर्ण आते हैं। इस प्रकार सूत्र का अर्थ है —

अयन्त अव्ययी भाव से समासान्त 'टच्' विकल्प से होता है। जैसे — 'समिध्याः समीपम् इस विग्रह में 'उपसमिध्' शब्द से प्रकृत सूत्र से 'टच्' प्रत्यय होने पर प्रातिपदिकादि कार्य के बाद 'उपसमिधम्' पद बनता है। टच् के विकल्प पक्ष में 'उपसमित्' रूप बनता है।